© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
International Journal of Scientific Research in Science and Technology

शिक्षकों के शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं कृत्य संतोष के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन

डॉ0 नन्दलाल मिश्रा
शोध निर्देशक, एसोसिएट प्रोफेसर,
महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय,
चित्रकूट, जिला–सतना (म0प्र0) भारत

चन्द्र प्रकाश मणि त्रिपाठी
शोधछात्र (शिक्षाशास्त्र)
कला संकाय
लोक शिक्षा एवं जनसंचार विभाग
महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय,
चित्रकूट, जिला–सतना (म0प्र0) भारत

सारांश – प्रस्तुत समस्या कथन **"शिक्षकों के शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं कृत्य संतोष के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन" करना है।** प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है– शिक्षकों के शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं कृत्य संतोष के विमा के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण के लिए शिक्षकों के शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं कृत्य संतोष के विमा के मध्य सम्बन्ध नहीं है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सहसम्बन्धात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जनपद में स्थित पूर्व माध्यमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत् शिक्षकों को जनसंख्या माना गया है। न्यादर्श के रूप में प्रयागराज जनपद में स्थित पूर्व माध्यमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत् 100 शिक्षकों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि से किया गया है। शिक्षकों के शैक्षिक अभिप्रेरणा मापनी का निर्माण एवं प्रमाणीकरण डा0 के0एस0 मिश्र एवं डा0 प्रतीक उपाध्याय द्वारा तथा शिक्षक कृत्य संतोष मापनी प्रो0 एस0 पी0 गुप्ता व जे0 पी0 श्रीवास्तव द्वारा निर्मित व मानकीकृत है। प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण एवं गुणनफल आर्घूण सहसम्बन्ध गुणांक सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष पाया कि शिक्षकों के शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं कृत्य संतोष की विमाओं वेतन एवं अन्य लाभ, सहकर्मियों के मध्य अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध, अध्यापक–प्राचार्य सम्बन्ध, उपलब्धि, सामुदायिक दृष्टिकोण, पर्यवेक्षण, पारिवारिक जीवन तथा पहचान एवं स्तर के मध्य धनात्मक सम्बन्ध है। शिक्षकों शिक्षकों के शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं कृत्य संतोष की विमाओं व्यवसाय, अध्यापक–छात्र सम्बन्ध, शिक्षण संस्थान, कार्यस्थितियाँ, कार्यभार, योग्यता का उपयोग, गतिविधि, स्वतंत्रता, नीतियाँ एवं अभ्यास, बढ़ोत्तरी एवं विकास की संभावना, पुस्तकालय नीति और अभ्यास तथा सुरक्षा के मध्य सम्बन्ध नहीं है।

की–वर्ड– शिक्षक, शैक्षिक अभिप्रेरणा, कृत्य संतोष।

प्रस्तावना– शिक्षा ही वह संस्कार है, जो व्यक्तियों को भिन्नता के आधार पर योग्य बनाता है। महात्मा गाँधी शिक्षा को बालक या प्रौढ़ के शरीर, मन और आत्मा में विद्यमान सर्वोत्तम गुणों के सर्वांगीण विकास का साधन मानते थे। वास्तव में योग्य, कुशल एवं प्रभावपूर्ण शिक्षक ही वह धुरी है जिसके चारों ओर सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया घूमती है। शिक्षक के सामान्य एवं कक्षागत क्रियाकलाप शिक्षक व्यवहार की ओर संकेत करते हैं और इन क्रियाकलापों पर शिक्षक की प्रभावशीलता आधारित होती है। इस सफलता के सन्दर्भ में शिक्षक के प्रति अन्य व्यक्तियों द्वारा प्रतिक्रियाएं प्रदर्शित की जाती हैं। ये प्रतिक्रियाएं शिक्षक की प्रभावशीलता को दर्शाती हैं। शिक्षक की प्रभावशीलता में उसकी शिक्षा तथा सामान्य व तत्कालीन ज्ञान, प्रेरित करने की योग्यता, शिक्षण कौशल, व्यवसाय से सम्बन्धित ज्ञान, पाठ्य सहगामी क्रियाओं का ज्ञान, कक्षा–कक्ष प्रबन्ध की योग्यता, समाज एवं विद्यालय के अन्य सदस्यों के साथ आपसी मेल–मिलाप का स्वभाव, संवेगात्मक रूप से स्थिर, सलाह, निर्देशन की योग्यता, नैतिक रूप से कुशल तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व को समाहित किया जाता है। इन सब क्रियाओं के प्रति विद्यालय के प्राचार्य, साथी समूह, स्वयं शिक्षक एवं विद्यार्थियों की प्रति क्रियाओं में अमुख– शिक्षकों की प्रभावशीलता के रूप में प्रेरित किया जाता है।

किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली की सफलता अधिकांशतः उस देश के शिक्षकों की गुणवत्ता एवं प्रभावशीलता पर निर्भर करती है। शिक्षकों का उत्तरदायित्व कक्षा में पाठ्य या विषय–वस्तु का शिक्षण ही नहीं वरन् राष्ट्र की चिंतनधारा को बदलने की शक्ति, व्यवसाय, चुनाव, सामाजिक जागरूकता, समाज व देश का विकास पाठ्य सहगामी क्रियाएं नवीन तकनीकी की जानकारी देना भी उसका कर्तव्य है।

शिक्षा पद्धति की सफलता शिक्षकों की योग्यता पर निर्भर करती है। अच्छे एवं प्रभावपूर्ण शिक्षकों के अभाव में सर्वोत्तम शिक्षा पद्धति का भी असफल होना अवश्यम्भावी है लेकिन अच्छे प्रभावपूर्ण एवं योग्य शिक्षकों द्वारा शिक्षा पद्धति के दोषों को भी अधिकांशतः दूर किया जा सकता है। शिक्षक कर्तव्यनिष्ठ, विषय ज्ञान के साथ–साथ चरित्रवान, धैर्यवान, परिश्रमी प्रभावपूर्ण शिक्षण वाला तथा मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने वाला है तो उसे अपने व्यवसाय में संतुष्टि, सफलता व पूर्ण सम्मान मिलता है।

वर्तमान समय में शिक्षित बेरोजगारी बढ़ने तथा अन्य विकल्प न मिलने पर विवश होकर व्यक्ति अध्यापन व्यवसायिक करने लगे हैं। विवशतावश शिक्षक बन जाने पर भी उनके सामने कुछ ऐसे कारक उत्पन्न हो जाते हैं, जिससे उनकी शिक्षण प्रभावशीलता प्रभावित होती है। उनकी योग्यता क्षमतानुसार उचित पद, सेवा सुरक्षा, वेतन, व्यवसायिक दशाएं प्राप्त साधन–सुविधाएं, वातावरण, संगठन का अभाव, सहयोगियों, प्रधानाचार्य, प्रबन्धकों के साथ उचित मानवीय सम्बन्धों के अभाव आदि के कारण शिक्षक कुंठित रहते है। परिणामस्वरूप वह अपने शिक्षण व्यवसाय के साथ चाहकर भी न्याय नहीं कर पाते है। अतः उचित पर्यावरण एवं सहयोगात्मक व्यवहार न मिलने से शिक्षकों में अनेक मनोवैज्ञानिक समस्यायें उत्पन्न हो जाती है। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षक प्रभावपूर्ण शिक्षण करने में सक्षम नहीं हो पाते है। वे अपने कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों का पालन उचित प्रकार से नहीं कर सकेंगे साथ ही शिक्षक विद्यार्थियों को उनके परिवार, समाज व देश के प्रति दायित्वों की जानकारी प्रदान करने में सक्षम नहीं हो सकेंगे,

जिसका प्रभाव पूरे शिक्षण एवं राष्ट्र पर पड़ता है। इसलिए एक कुशल एवं प्रभावपूर्ण शिक्षक के लिए अपने व्यवसाय के प्रति संतुष्टि का होना अति आवश्यक है।

जिन विद्यालयों का वातावरण अच्छा होता है उन विद्यालयों के शिक्षक भी व्यवसायिक–सन्तुष्टि का अनुभव करते हैं। ऐसे शिक्षक विद्यालय के वातावरण को सदैव अच्छा बनाये रखने का प्रयास करते हैं, क्योंकि उनके मनोबल समुन्नत रहते हैं। शिक्षकों को प्रधानाध्यापक से मानवीय व्यवहार की अनुभूति होती है, समय–समय पर प्रधानाध्यापक शिक्षकों को पृष्ठपोषण देते है, शिक्षकों की समस्याओं को जानकर निदान देने का प्रयास करते है, आवश्यकता पड़ने पर शिक्षकों हेतु विद्यालयी नियमों में लचीलापन भी रखते हैं। फलतः शिक्षक कक्षा में मन लगाकर शिक्षण करते हैं जिससे इनके द्वारा पढ़ाये गये छात्रों को अच्छी उपलब्धि मिलती है और शिक्षकों में व्यवसायिक–सन्तुष्टि बनी रहती है।

जिन विद्यालयों में शिक्षकों को विद्यालयी कार्यों में सहभाग के अवसर नहीं मिलते हैं विद्यालय के नियम व प्रशासन शिक्षकों की उन्नति के पक्ष में नहीं होते हैं, शिक्षकों का प्रधानाध्यापक व आपसी शिक्षकों के साथ अच्छा सहकारी सम्बन्ध नहीं होता है, शिक्षकों को व्यवसायिक सुरक्षा प्रदान नहीं की जाती है फलतः शिक्षक व्यवसायिक–सन्तुष्टि का अनुभव नहीं करते हैं।

व्यवसाय के किन पक्षों अथवा रीतियों से सन्तोष प्राप्त होता है यह मनोवैज्ञानिक विषय हैं एक व्यक्ति के लिये काम की अच्छी से अच्छी दशाएं, सामाजिक सम्मान एवं प्रतिष्ठा, उत्तम वेतन, मनोवांछित स्थान पर नियुक्ति होने के बावजूद उसे वह सन्तोष प्राप्त नहीं होता है जो किसी समान योग्यता रखने वाले किसी दूसरे व्यक्ति को कम सुविधाजनक अवस्थाओं और कम वेतन में भी प्राप्त हो जाता है। कहने का अभिप्राय यह है कि सन्तोष अथवा सन्तुष्टि एक आन्तरिक चीज है वाह्य नहीं। इसका सम्बन्ध मनुष्य के ह्रदय से होता है। ऐसे अनेक व्यक्ति होते है जो श्रेष्ठतम अवस्थाओं में भी असन्तुष्ट दिखाई देते हैं और इसके विपरीत अनेक ऐसे भी व्यक्ति होते हैं जो प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने व्यवसाय के प्रति सन्तुष्ट नजर आते हैं। लेकिन इसके बावजूद इस तथ्य को झुठलाया नहीं जा सकता है कि सन्तुष्टि अथवा सन्तोष की भावना के मूल में भी कुछ प्रवृत्ति मूलक और भौतिकवादी परिस्थितियाँ होती है। एक व्यक्ति किसी व्यवस्था को इतना अधिक पसन्द करता है कि वह अच्छी से अच्छी भौतिक सुविधाएं व सम्मान मिलने वाले किसी बड़े से बड़े पद को ठुकरा सकता है। इसके विपरीत कुछ लोग उसी व्यवसाय या व्यवसायिक को करना पसन्द करते है और उसी में सर्वाधिक तृप्ति अनुभव करते हैं जिसमें सर्वाधिक श्रेष्ठ आर्थिक एवं भौतिक सुविधाएँ मिलें। कहने का तात्पर्य यह है कि व्यवसाय से मिलने वाले सन्तोष के लिए सबसे पहली आवश्यकता प्रवृत्तिजन्य होती है, अर्थात् अपने स्वभाव, प्रवृत्ति रूचि और इच्छाओं के अनुरूप मिलने वाले व्यवसाय मे अधिक सन्तुष्टि की पहली शर्त है।

अध्ययनकर्त्ता ने अपने अध्ययन के लिए **प्रो0 एस0 पी0 गुप्ता** द्वारा निर्मित **"अध्यापक कृत्य संतोष मापनी"** का प्रयोग किया है। यह बीस क्षेत्रों में व्यावसायिक सन्तोष का मापन करती है। इन बीस क्षेत्रों के प्रत्येक क्षेत्र में कृत्य संतोष की परिभाषा इस प्रकार की गई है :–

1. **वेतन और अन्य लाभ :** शिक्षकों को शिक्षण कार्य के लिए मिलने वाले वेतन एवं अन्य स्रोतों से कुल अर्जित आय से कृत्य सन्तोष।
2. **सहकर्मी के साथ व्यक्तिगत अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध :** विद्यालयों में शिक्षकों एवं अन्य कर्मचारियों के साथ उनके व्यक्तिगत एवं अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों के प्रति सन्तुष्टि।
3. **अध्यापक–प्राचार्य सम्बन्ध :** विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों के साथ अन्तक्रिया सन्तुष्टि।
4. **व्यवसाय :** शिक्षकों का शिक्षण व्यवसाय के प्रति सन्तुष्टि।
5. **अध्यापक–विद्यार्थी सम्बन्ध :** शिक्षकों का विद्यार्थियों के मध्य अन्तर्क्रिया एवं सम्बन्ध के प्रति सन्तुष्टि।
6. **शिक्षण संस्था :** शिक्षकों का अपने संस्थान के प्रति सन्तुष्टि।
7. **कार्य परिस्थिति :** विद्यालय में शिक्षकों के भौतिक शिक्षण कार्यों एवं परिस्थितियों तथा उनमें उपलब्ध संसाधनों के प्रति सन्तुष्टि।
8. **कार्यभार :** विद्यालय में शिक्षकों को दिये गये कार्यों के प्रति सन्तुष्टि।
9. **योग्यता का उपयोग :** शिक्षकों को योग्यता के अनुसार कार्य के प्रति सन्तुष्टि।
10. **उपलब्धि :** शिक्षकों द्वारा विद्यालय में किये जाने वाले शिक्षण कार्यों से प्राप्त होने वाले उपलब्धि के प्रति सन्तुष्टि।
11. **क्रिया–कलाप :** शिक्षकों द्वारा किये जाने वाले शिक्षण कार्य के कर्त्तव्यों के प्रति जो कार्य वास्तविक रूप से किया जाता है, के प्रति सन्तोष।
12. **सामुदायिक पहलू :** विद्यालय में अन्य लोगों के द्वारा किये जाने वाले कार्यों के प्रति सन्तुष्टि।
13. **पर्यवेक्षण :** विद्यालय में पर्यवेक्षक सहायोग एवं उनके प्रति शिक्षकों की सन्तुष्टि।
14. **पारिवारिक जीवन :** शिक्षकों के पारिवारिक आवश्यकताओं के अनुरूप सन्तुष्टि।
15. **स्वतंत्रता :** शिक्षकों के शिक्षण कार्यों में कौशलों के विकास के उपलब्ध अवसर के प्रति सन्तुष्टि।
16. **नीतियाँ और अभ्यास :** विद्यालय में सरकारी एवं विद्यालयी नीतियों के प्रति शिक्षकों की सन्तुष्टि।
17. **उन्नति और विकास की सम्भावना :** शिक्षकों का विद्यालय में उन्नति एवं प्रोन्नति के प्रति सन्तुष्टि।
18. **पुस्तकालय योजना और अध्ययन की व्यवस्था :** विद्यालय में पुस्तकालय एवं शिक्षण कार्यों में निहित संसाधनों के प्रति सन्तुष्टि।
19. **सुरक्षा :** शिक्षकों का विद्यालय में बने रहने एवं स्थायी रहने के प्रति सन्तुष्टि।
20. **मान्यता व स्तर :** दी गयी जिम्मेदारी से प्राप्त प्रशंसनीय संतोष को देखते हुए उसके साथ संतोष।

अभिप्रेरणा एक ऐसी परिकल्पनात्मक प्रक्रिया है जो प्राणी के व्यवहार के निर्धारण व संचालन से सम्बन्ध रखती है। व्यवहार को अनुप्रेरित, सक्रिय, प्रारम्भ अथवा बनाए रखने वाले कारकों को अभिप्रेरणात्मक कारक कहा जाता है। अभिप्रेरणात्मक प्रक्रियाओं को इंगित करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। वास्तव में यह एक आन्तरिक

शक्ति होती हो जो प्राणी को किसी विशिष्ट प्रकार के कार्य को करने के लिए प्रेरित करती हैं। अभिप्रेरणा को प्रत्यक्ष निरीक्षण के द्वारा देखा जाना सम्भव नहीं हो पाता हैं प्राणी के व्यवहार का अवलोकन करके उसकी अभिप्रेरणा को समझा जा सकता है। अभिप्रेरणा वास्तव में क्यों के प्रश्न का उत्तर देती है। व्यक्ति खाना क्यों खाता है? व्यक्ति दूसरों से क्यों लड़ता है? व्यक्ति उच्च पदों पर क्यों जाना चाहता है? जैसे प्रश्नों का उत्तर अभिप्रेरणा से सम्बन्धित है।

गिलफोर्ड के अनुसार, अभिप्रेरणा एक कोई भी विशेष आन्तरिक दशा या कारक है जो क्रिया को आरम्भ करने तथा बनाये रखने की प्रवृत्त होती है।

उपयुक्त परिभाषाओं का विश्लेषण करने पर शिक्षकों में अभिप्रेरणा के निम्नलिखित तथ्य स्पष्ट होते हैं– अभिप्रेरणा शिक्षकों के शिक्षण व्यवहार को जागृत या उत्तेजित करने के साथ–साथ व्यवहार का संचालन, शिक्षक के अन्दर शक्ति परिवर्तन, क्रियाशीलता का द्योतक, एवं शिक्षकों को निर्देशन प्रदान करती है।

अतः उपरोक्त के आधार पर कहा जा सकता है कि शैक्षिक अभिप्रेरणा शिक्षकों की आन्तरिक कारक या स्थिति अथवा तत्परता है जो कक्षा–कक्ष में विद्यार्थियों के अन्दर उत्प्रेरणा जाग्रत करती है तथा विद्यार्थियों के शिक्षण कार्यों में बढ़ावा देने में अपना विशेष योगदान प्रदान करता है।

दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि शिक्षकों की शैक्षिक अभिप्रेरणा उनके आन्तरिक एवं बाह्य दशायें होती है जिससे वह शिक्षण कार्यों में अपने विशेष क्रियाओं द्वारा विद्यार्थियों को प्रेरित तथा क्रियाशील बनाती है।

अतः कहा जा सकता है कि शिक्षकों के कृत्य संतोष में उनके शैक्षिक अभिप्रेरणा का सम्बन्ध होना स्वाभाविक है। पूर्व में किये गये अध्ययनों में **इलीफेलेट (2016)** ने अध्ययन के निष्कर्ष में इंगित किया कि अध्यापकों के प्रदर्शन को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों जैसे किताबों, प्रयोगशाला और पर्याप्त शिक्षक संख्या, जल, अध्यापकों की भोजन की गुणवत्ता, स्वास्थ्य सेवा, निर्णयन में अध्यापकों की भूमिका भी कार्य प्रदर्शन को प्रभावित करती है। **नवचुकवु, प्रिन्स (2016)** ने अध्ययन के निष्कर्ष में इंगित किया कि अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि की सुनिश्चितता अनेक अध्यापन प्रदर्शन को प्रभावित करता है क्योंकि एक अध्यापक के तौर पर आजकल शैक्षिक नीतियों, प्रशासन, वेतन, आवश्यक सुविधाओं, भौतिक पुरस्कार और प्रगति से असंतुष्ट है। **उठवाल, राहुल (2017)** ने अध्ययन में पया कि शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह कक्षा में उपस्थित विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, प्रेरणाओं एवं मनोवृत्तियों की जानकारी रखें। शिक्षक विद्यार्थियों को समझने में जिस सीमा तक सफल होते हैं उसी समय तक उनका अध्यापन प्रभावी होता है तथा विद्यार्थी उनकी शिक्षा से लाभान्वित हो पाते हैं। **महावर, ज्योति एवं पारीक, अलका (2018)** ने अध्ययन में पाया कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के अभिप्रेरित व्यवहार में सार्थक अन्तर है अर्थात् गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में अभिप्रेरित व्यवहार सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पाया गया।

अतः पूर्व में प्राप्त अध्ययनों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शिक्षकों के कृत्य संतोष पर उनकी अभिप्रेरणा सम्बन्धित हैं।

समस्या कथन

''शिक्षकों के शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं कृत्य संतोष के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन''।

अध्ययन का उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. शिक्षकों के शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं कृत्य संतोष के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. शिक्षकों के शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं कृत्य संतोष के विमा के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. शिक्षकों के शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं कृत्य संतोष के मध्य सम्बन्ध नहीं है।
2. शिक्षकों के शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं कृत्य संतोष के विमा के मध्य सम्बन्ध नहीं है।

शोध विधि–

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सहसम्बन्धात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

जनसंख्या के रूप में प्रयागराज जनपद में स्थित पूर्व माध्यमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत् शिक्षकों को जनसंख्या माना गया है।

न्यादर्श

न्यादर्श के रूप में प्रयागराज जनपद में स्थित पूर्व माध्यमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत् 100 शिक्षकों का चयन साधारण यादृच्छिक विधि से किया गया है।

उपकरण–

शिक्षकों के शैक्षिक अभिप्रेरणा मापनी का निर्माण एवं प्रमाणीकरण डा0 के0एस0 मिश्र एवं डा0 प्रतीक उपाध्याय द्वारा तथा शिक्षक कृत्य संतोष मापनी प्रो0 एस0 पी0 गुप्ता व जे0 पी0 श्रीवास्तव द्वारा निर्मित व मानकीकृत है।

सांख्यिकी विधियाँ

प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण एवं गुणनफल आर्घूण सहसम्बन्ध गुणांक सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या–

1. **शिक्षकों के शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं कृत्य संतोष के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।**

H_{01} शिक्षकों के शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं कृत्य संतोष के विमा के मध्य सम्बन्ध नहीं है।

सारणी सं0 01

शिक्षकों के शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं कृत्य संतोष के विमा के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक

क्रम	शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं कृत्य संतोष के विमा	न्यादर्श	सह–सम्बन्ध गुणांक (r)
1.	वेतन एवं अन्य लाभ	100	0.3213*
2.	सहकर्मियों के मध्य अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध	100	0.2123*
3.	अध्यापक–प्राचार्य सम्बन्ध	100	0.2284*
4.	व्यवसाय	100	0.1110
5.	अध्यापक–छात्र सम्बन्ध	100	0.1517
6.	शिक्षण संस्थान	100	0.0629
7.	कार्यस्थितियाँ	100	0.1581
8.	कार्यभार	100	0.1534
9.	योग्यता का उपयोग	100	0.0715
10.	उपलब्धि	100	0.2178*
11.	गतिविधि	100	0.1138
12.	सामुदायिक दृष्टिकोण	100	0.3638*
13.	पर्यवेक्षण	100	0.2732*
14.	पारिवारिक जीवन	100	0.3923*
15.	स्वतंत्रता	100	0.0908
16.	नीतियाँ एवं अभ्यास	100	0.0395
17.	बढ़ोत्तरी एवं विकास की सम्भावना	100	0.1846*
18.	पुस्तकालय नीति और अभ्यास	100	-0.0751
19.	सुरक्षा	100	0.0445
20.	पहचान एवं स्तर	100	0.5989*

*.05 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि शिक्षकों के शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं कृत्य संतोष की विमाओं वेतन एवं अन्य लाभ, सहकर्मियों के मध्य अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध, अध्यापक–प्राचार्य सम्बन्ध, उपलब्धि, सामुदायिक दृष्टिकोण, पर्यवेक्षण, पारिवारिक जीवन तथा पहचान एवं स्तर के मध्य सह–सम्बन्ध गुणांक के मान क्रमशः 0.3213, 0.2123, 0.2284, 0.2178, 0.3638, 0.2732, 0.3923 एवं 0.5989 हैं, जो .05 स्तर पर सार्थक हैं। अतः शिक्षकों के

शैक्षिक अभिप्रेरणा में कमी या वृद्धि का उनके कृत्य संतोष की विमाओं वेतन एवं अन्य लाभ, सहकर्मियों के मध्य अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध, अध्यापक–प्राचार्य सम्बन्ध, उपलब्धि, सामुदायिक दृष्टिकोण, पर्यवेक्षण, पारिवारिक जीवन तथा पहचान एवं स्तर में कमी या वृद्धि होगी।

सारणी के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षकों शिक्षकों के शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं कृत्य संतोष की विमाओं व्यवसाय, अध्यापक–छात्र सम्बन्ध, शिक्षण संस्थान, कार्यस्थितियाँ, कार्यभार, योग्यता का उपयोग, गतिविधि, स्वतंत्रता, नीतियाँ एवं अभ्यास, बढ़ोत्तरी एवं विकास की संभावना, पुस्तकालय नीति और अभ्यास तथा सुरक्षा के मध्य सह–सम्बन्ध गुणांक का मान 0.1110, 0.1517, 0.0629, 0.1581, 0.1534, 0.0715, 0.1138, 0.0908, 0.0395, 0.1846, –0.0751 तथा 0.0445 है जो .05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शिक्षकों के शैक्षिक अभिप्रेरणा में कमी या वृद्धि का उनके कृत्य संतोष की विमाओं व्यवसाय, अध्यापक–छात्र सम्बन्ध, शिक्षण संस्थान, कार्यस्थितियाँ, कार्यभार, योग्यता का उपयोग, गतिविधि, स्वतंत्रता, नीतियाँ एवं अभ्यास, बढ़ोत्तरी एवं विकास की संभावना, पुस्तकालय नीति और अभ्यास तथा सुरक्षा में कमी या वृद्धि नहीं पायी गयी।

निष्कर्ष–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

- शिक्षकों के शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं कृत्य संतोष की विमाओं वेतन एवं अन्य लाभ, सहकर्मियों के मध्य अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध, अध्यापक–प्राचार्य सम्बन्ध, उपलब्धि, सामुदायिक दृष्टिकोण, पर्यवेक्षण, पारिवारिक जीवन तथा पहचान एवं स्तर के मध्य धनात्मक सम्बन्ध है।
- शिक्षकों शिक्षकों के शैक्षिक अभिप्रेरणा एवं कृत्य संतोष की विमाओं व्यवसाय, अध्यापक–छात्र सम्बन्ध, शिक्षण संस्थान, कार्यस्थितियाँ, कार्यभार, योग्यता का उपयोग, गतिविधि, स्वतंत्रता, नीतियाँ एवं अभ्यास, बढ़ोत्तरी एवं विकास की संभावना, पुस्तकालय नीति और अभ्यास तथा सुरक्षा के मध्य सम्बन्ध नहीं है।

सुझाव–

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष के आधार पर यह सुझाव प्रस्तुत किया जा सकता है कि जिस प्रकार विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा उनके शैक्षिक उपलब्धि में सकारात्मक प्रभाव डालती है उसी प्रकार शिक्षकों के शैक्षिक अभिप्रेरणा उनके कृत्य संतोष के साथ–साथ उनके शैक्षिक कार्यों में भी प्रभाव डालती है। अतः संस्थान द्वारा शिक्षकों को अभिप्रेरित किया जाना आवश्यक है साथ ही साथ शिक्षा आयोग एवं सरकार द्वारा ऐसी योजनाएँ एवं नीतियाँ समय–समय पर बनायी जानी चाहिए जिससे शिक्षक अभिप्रेरित होकर शिक्षण कार्यों को सुचारू एवं सुदृढ़ के साथ–साथ उच्च स्तरीय शिक्षण कार्य कर सकें जिसका लाभ बच्चे पा सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- उठवाल, राहुल (2017). एक शिक्षक की प्रेरणा, उत्प्रेरक के रूप में चुनौतियाँ एवं समाधान, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ हिन्दी रिसर्च, वॉल्यूम–3, इश्शू–5, पृ0 06–08
- इलीफेलेट (2016). ए कम्प्रेटिव स्टडी ऑफ टीचर्स मोटिवेशन ऑन वर्क परफार्मेन्स इन सेलेक्टेड पब्लिक एण्ड प्राइवेट सेकेण्डरी स्कूल्स इन किलमंजारो रीजन, तंजानिया, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड रिसर्च, वॉ0 4, नं0 6, पृ0 583–600
- गुप्ता, एस0पी0 (2005). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ0 502
- गुप्ता, एस0पी0 (2005). आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, पृ0 533
- गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, अलका (2009). शिक्षा मनोविज्ञान, तृतीय संस्करण, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन, पृ0 226
- नवचुकवु, प्रिन्स (2016). टीचर्स जॉब सैटिसफैक्शन एण्ड मोटिवेशन फॉर स्कूल इफ्टेक्टिवनेस : एन एसेसमेण्ट, https://www.researchgate.net/publication/289046365
- महावर, ज्योति एवं पारीक, अलका (2018). शिक्षकों की नेतृत्वशीलता का विद्यार्थियों के अभिप्रेरित व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, इन्सपीरा–जर्नल ऑफ मार्डन मैनेजमेण्ट एण्ड इण्टरप्रीन्यूरशिप, वॉल्यूम–08, नं0 04, पृ0 552–554